अध्याय V

शोध सारांश,

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1	भूमिका
5.2	शोध के उददे्श्य
5.3	परिकल्पना
5.4	चर
5.5	न्यादर्श
5.6	उपकरण
5.7	प्रदत्तों का विश्लेषण
5.8	मुख्य परिणाम
5.9	निष्कर्ष
5.10	शैक्षिक सुझाव
5.11	भविष्य के लिए शोध सुझाव
5.12	पर्यावरणवादी

अध्याय V

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 भूमिका :–

सारांश किसी भी अध्याय को संक्षिप्त करने का प्रयास होता है जिसके द्वारा अध्याय को संक्षिप्त व सरल रूप में समझा जा सके। इस अध्याय में लघु शोध का सारांश अध्याय चार में दिए गये प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही अध्ययन के आगे संबंधित अध्ययन को विभिन्न क्षेत्रों में करने के लिए सुझाव भी देने का प्रयास किया गया है।

पर्यावरण शिक्षा स्कूल में किस प्रकार देनी चाहिए इसका भी विश्लेषण सुझाव में किया गया है।

5.2 समस्या का कथन :–

" प्रारंभिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।"

5.3 अध्ययन के उद्देश्य :–

1. कक्षा आठवीं के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
2. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।
3. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।

4. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।

5. कक्षा आठवीं के विद्यार्थीयों में पर्यावरण जागरूकता एवं विज्ञान उपलब्धि में संबंध जानना।

6. कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता एवं सामाजिक विज्ञान उपलब्धि में संबंध जानना।

5.4 परिकल्पनाएँ :–

1. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी, छात्रों में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. शासकीय एवं आशासकीय विद्यालयों के कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4. कक्षा आठवीं के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता एवं विज्ञान उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

5. कक्षा आठवीं के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता एवं सामाजिक विज्ञान उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

5.5 चर :–

शोध समस्या में निम्न चर हैं।

1. **आश्रित चर**

   (i) पर्यावरण जागरूकता

2. स्वतंत्र चर

(i) लिंग – छात्र/ छात्रा

(ii) क्षेत्र– ग्रामीण/शहरी

(iii) विद्यालय – शासकीय/अशासकीय

(iii) शैक्षिक उपलब्धि – विज्ञान उपलब्धि/सामाजिक विज्ञान उपलब्धि

5.6 न्यादर्श :–

प्रस्तुत अध्याय में गुजरात राज्य के राजकोट जिले के 4 शहरी एवं 4 ग्रामीण स्कूल लिए गये हैं। न्यादर्श का उद्देश्य पूर्ण प्रकार से चयनित किया गया है।

इस शोध कार्य के अन्तर्गत आठ स्कूल से कुल 240 विद्यार्थियों का समावेश किया गया है। जिसमें 120 बालक तथा 120 बालिकाएं शामिल है।

5.7 उपकरण :–

संबंधित अध्ययन के लिए प्रदत्तों के संकलन हेतु दो प्रकार के साधनों का प्रयोग किया गया है।

1. पर्यावरण जागरूकता परीक्षण :–

ताज हसीन पर्यावरण जागरूकता स्केल का गुजराती में अनुवाद करके उपकरण के रूप में उपयोग किया है।

2. शैक्षिक उपलब्धि :–

शैक्षिक उपलब्धि जानने के लिए शालेय रेकार्ड से प्राप्त कक्षा 7वीं की वार्षिक कसौटी के नतीजे तथा कक्षा 8वीं की प्रथम एवं द्वितीय

कसौटी के विज्ञान एवं समाज विज्ञान विषय में प्राप्त अंको का व्यक्तिगत तौर पर औसत निकाल के उपकरण के रूप मे प्रयोग किया गया।

5.8 प्रदत्तों का विश्लेषण :–

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु प्रदत्तों का विश्लेषण के लिए मध्ययान, मानक विचलन 't' परीक्षण, सहसंबंध एवं प्रतिशत सांख्यिकी का उपयोग किया गया है।

5.9 समस्या के मुख्य परिणाम :–

1. कक्षा आठवी के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता बहु ज्यादा है।
2. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर है।
3. कक्षा आठवी के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. कक्षा आठवीं के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता एवं विज्ञान उपलब्धि में सार्थक संबंध है।
6. कक्षा आठवीं के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता एवं सामाजिक विज्ञान उपलब्धि में सार्थक संबंध है।

5.10 निष्कर्ष :–

कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता बहु ज्यादा हैं एवं विद्यार्थियों को ग्रामीण एवं शहरी दो भागों में विभाजित किये जाने पर, पर्यावरण जागरूकता परीक्षण द्वारा ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्रों में पर्यावरण जागरूकता ज्यादा पायी गयी एवं छात्रों की अपेक्षा

छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता कम पायी गयी है। शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता समान पाई गई हैं।

विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता एवं विज्ञान उपलब्धि में सार्थक संबंध पाया गया और पर्यावरण जागरूकता एवं सामाजिक विज्ञान उपलब्धि में सार्थक संबंध पाया गया है।

अंततः इस अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता को शैक्षिक उपलब्धि की ओर बढ़ाने की आवश्यकता हे।

5.11 शैक्षिक सुझाव :–

1. विद्यार्थियों उसके पर्यावरण के संबंध में अधिक से अधिक जानकारी दी जाए। उसके चारों और कौन–कौन से पेड़ पौधे हैं, कौन–कौन से पशु–पक्षी अकसर दिखाई देते हैं, उनसे क्या लाभ एवं हानियां हैं, हम सबका समावेश करते हुए पाठ्यचर्या तैयार की जाए। उदाहरण के लिए अगर हम चट्टानों एवं मिट्टी के संबंध में पढ़ा रहे हैं तो आस–पास पायी जाने वाली चट्टानों के संबंध में जानकारी उन्हें दिखाकर संबंधित गुणों को बच्चों को अनुभव कर दिया जाए। वहा पर मिलने वाली मिट्टी के संबंध में जानकारी इसी तरह से देना भी इसी प्रक्रिया का अंग होगा। "जीवित वस्तुएं" पढ़ाते समय अनजानी चीजों का जिक्र करने की अपेक्षा उन पशु–पक्षियों एवं पेड़–पौधों से अवगत कराना अधिक महत्वपूर्ण लाभदायक और आवश्यक होगा जिनसे बच्चों का प्रतिदिन वास्ता पड़ता हैं।

2. विद्यार्थियों को इसका ज्ञान कराना कि समय के अनुसार पर्यावरण में परिवर्तन होते हैं और हमारा उद्देश्य इसको अपने लिए अधिक से अधिक उपयोगी बनाए रखना है और दूषित एवं नष्ट होने से बचाना है। हम और हमारा पर्यावरण एक दूसरे से प्रभावित होते हैं और एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व संभव नहीं है।

3. यह जानकारी देना कि हम सब एक लम्बी श्रृंखला की कड़ी हैं जिसमें सब एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। समाज में किसान, जमादार, शिक्षक, पोस्टमेन, दुकानदार, दूधवाला, डॉक्टर आदि हैं। यह सब एक दूसरे पर अनेक तरह से निर्भर करते हैं। किसान जो चीजें पैदा करता है वह समाज में अन्य लोगों के काम आती है। डॉक्टर सब का इलाज करता है, पोस्टमेन सबके पत्रों को पहुँचाना है और शिक्षक सबके बच्चों को पढ़ाने का काम करता है किसी का काम दूसरे के बिना नहीं चल सकता है।

4. विद्यार्थियों को वैज्ञानिक तथ्यों की अधिक से अधिक जानकारी प्रयोगों और क्रियाओं के माध्यम से दी जाये। यह क्रियाऐं उन चीजों के माध्यम से की जाये जो कि विद्यार्थियों के पर्यावरण का अंग हो। उदाहरण के लिए यदि विद्यार्थियों को यह ज्ञान कराना है कि पहिये चीजों के एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में मद्द करते है तो भारी चीज को पहिये के साथ और साधारणतया जमीन पर पहिये के बिना खींच कर और कांच की गोलियों पर रखकर खिसकाने का अनुभव बच्चों को देना और उससे उचित परिणाम निकल पाना अधिक लाभकारी होगा। साथ ही साथ उन

चीजों से अवगत कराना जिनमें पहिये का उपयोग होता है और बच्चा उनको प्रतिदिन देखता है, युक्तिसंगत होगा।

5. पर्यावरणीय – अध्ययन की शुरूआत कक्षा एक और दो में बच्चों द्वारा अपने चारों और प्रतिदिन दिखाई देने वाली वस्तुओं का निरीक्षण (अवलोकन) करा कर की जा सकती हैं। यह वस्तुएं उनके भौतिक और सामाजिक वातावरण से ली जाए। उदाहरण के लिए तरह–तरह के पक्षियों की चोंच का अवलोकन कर उन्हें चित्रबद्ध किया जा सकता हैं। जो लोग हमकों दैनिक जीवन में याद करते हैं। उनके काचों की तालिकाबद्ध करके इस पर चर्चा कर सकते हैं।

इस तरह से पर्यावरणीय अध्ययन एक ऐसा उपागम है जिसके द्वारा भौतिक और सामाजिक पर्यावरण के आधार पर उचित, अभिवृत्तियों का विकास होता है और वैज्ञानिक एवं अन्य प्रकार के तथ्यों को लिपिबद्ध करके उनकी विवेचना करने की कुशलता आती है। इस उपागम का उपयोग विज्ञान, गणित, समाजशास्त्र, भाषा कला, संगीत इत्यादि के अध्ययन अध्यापन में किया जा सकता है।

5.12 भविष्य के लिए शोध सुझाव :–

1. प्रायमरी स्कूल के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता एवं पर्यावरण संवर्धन का अध्ययन।
2. आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन।
3. विद्यार्थियों में पर्यावरण संवर्धन के लिए भ्रमण विधि महत्वपूर्ण है। इसके बारे में अध्ययन किया जा सकता है।

4. औद्योगिक एवं सामान्य क्षेत्र के विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन।

5. स्कूली पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा एक विषय के रूप में प्रस्तुत किय जाने पर अध्ययन किया जा सकता हैं।

6. प्रसार माध्यमों के द्वारा भी पर्यावरण शिक्षा को सिखाये जाने पर अध्ययन किया जा सकता है।

5.13 पर्यावरणवादी :–

भारत में कुछ व्यक्यिों ने पर्यावरण जागरूकता एवं पर्यावरण संवर्धन बढ़ाने का प्रयास किया है। उन्होंने पर्यावरण को असंतुलन की ओर ध्यान आकर्षित करके पर्यावरण के संरक्षण हेतु काफी प्रयास किये हैं। उन्होंने समाज को पर्यावरण संवर्धन का संदेश दिया है इस संदेश क्षेत्र में निम्नलिखित व्यक्तियों ने अपना योगदान दिया है।

1. सुन्दरलाल बहुगुणा :–

"चिपको आन्दोलन" वनों की सुरक्षा की दिशा में उठाया गया प्रगतिशील कदम है। इसका मुख्य उद्देश्य जंगलो के ठेकेदारों से वृक्षों की रक्षा करना अर्थात् वृक्षों को कटने से रोकना हैं। इस आन्दोलन को सुन्दरलाल बहुगुणा ने चलाया। पर्यावरण का ह्रास होने से सुन्दरलाल बहुगुणा ने रोका। उनकों 1995 में पद्म श्री पुरस्कार मिला।

2. चण्डी प्रसाद भट्ट :–

"चिपको आन्दोलन" इसी प्रकार का आन्दोलन कर्नाटक में चलाया गया। पर्यावरण संतुलित रहने के लिए वृक्ष कटाई को चण्डी प्रसाद भट्ट ने विरोध किया और कर्नाटक में पर्यावरण अच्छा रहने

के लिए काम किया है। उस काम के लिए उनहें 'मेगसेस पुरस्कार' से सम्मानित किया जा चुका है।

3. **श्रीमती मेनका गांधी :–**

श्रीमती मेनका गांधी वन्य प्राणी संरक्षण के लिए भारत में काम कर रहीं है। वन्य जीव प्राणी हत्या के खिलाफ आन्दोलन करके वन्य जीव का संरक्षण देने का काम श्रीमती मेनका गांधी कर रही है।

4. **श्री राजेन्द्र सिंह :–**

राजस्थान के मरूस्थल क्षेत्र में बरसात के पानी का संवर्धन करके जमीन में के पानी का स्तर को बढ़ाने का काम श्री राजेन्द्र सिंह ने किया है। इस काम के लिए सरकार में उन्हें 'रमन मेगसेस पुरस्कार' से सम्मानित किया है।

5. **मेद्या पाटकर :–**

'नर्मदा बचाओं आन्दोलन' मेद्या पाठ्कर ने महाराष्ट्र में चलाया है। नर्मदा सरोवर होने से 40,332 हेक्टर में हरे भरे जंगल पानी में डूब जायेंगे और वहां की पर्यावरण को नुकसान हो जायेगा। यह वन को वैसा का वैसा ही रहने दो यहां के पर्यावरण को असंतुलित नहीं बनाओं इसलिये मेद्या पाठ्कर ने यह आन्दोलन किया है।

6. **श्री बाबा आमटे :–**

श्री बाबा आमटे जैसे पर्यावरणविदों द्वारा नर्मदा पर बनने वाले बांधों के खिलाफ जोरदार प्रदर्शनों के माध्यम से हजारों

आदिवासियों में बड़ी परियोजनाओं द्वारा हो रहे पर्यावरण असंतुलन की ओर जनता और सरकार का ध्यान आकर्षित किया।

7. डॉ. शिवाजी राव :–

टहरी क्षेत्र का पर्यावरण बचाने के लिए डॉ. शिवाजी राव ने प्रयत्न किये हैं।

8. श्री मोहन धारिया :–

'बनराई' यह संस्था के अन्तर्गत वृक्षारोपण करके वन का संरक्षण करने में मोहन धारिया ने अपना योगदान दिया है।